साखी

पूर्व वर्षों के प्रश्नोत्तर
2016
निबंधात्मक प्रश्न

Question 1.

कबीर ने अपने दोहे में 'हिरण' का उदाहरण किस संदर्भ में दिया है? क्या आप भी कबीर के विचार से सहमत हैं? अपना उत्तर स्पष्ट रूप से लिखिए।

Answer:

कबीर ने अपने दोहे 'कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढ़ै बन माँहि' में हिरण का उदाहरण मानव-मात्र के लिए दिया है। कस्तूरी-मृग की नाभि में ही कस्तूरी सदैव बसती है, परंतु भ्रमवश वह उसे चारों ओर ढूँढता फिरता है। इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य अर्थात् जीवात्मा के मन में ही सदैव परमात्मा का वास होता है, परंतु ईश्वर को पाने के लिए वह उसे धार्मिक स्थलों में तथा बाह्याडंबरों की क्रियाओं में ढूँढने के लिए भटकता रहता है।

हाँ, मैं कबीर के विचार से पूर्णतया सहमत हूँ क्योंकि हम सभी उस परमात्मा के ही अंश हैं, जिसने हमने रचा है तथा उसी का अंश हमारे भीतर मौजूद है। ईश्वर तीर्थों, जंगलों आदि में निवास नहीं करते वरन् हमारे स्वयं के अंदर निवास करते हैं। हिरण की भाँति हम भी अज्ञानतावश बिना अपने अंतकरण में झाँके बाहर की दुनिया में उसे खोजते हैं। यदि हम सचमुच ईश्वर को पाना चाहते हैं तो ज्ञान की जोत जलाएँ तथा उसे अपने अंदर ही ढूँढ़ें।

Question 2.

कबीर ने अपने दोहे में निंदक को समीप रखने की सलाह दी है। क्या आप भी अपने निंदक को पसंद करते हैं? निंदक के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए उससे होने वाले लाभों के बारे में लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

कबीरदास जी ने अपने दोहे में 'निंदक नेड़ा राखिए' की सलाह दी है। उनके अनुसार हमारे विचारों, आचरणों तथा व्यवहारों को सुधारने के लिए निंदक की उपस्थिति परमावश्यक है। बिना किसी बाह्य वस्तु के मात्र अपनी वाणी से ही निंदक हमारे स्वभाव को निर्मल कर देता है। अतः उसे अपने आंगन में ही स्थान देना चाहिए।

वैसे यह कहना कठिन है कि निंदक हमें प्रिय होता है। हम अपनी पसंद तथा रुचि से उसे अपने साथ रखना चाहेंगे परंतु यह अवश्य कहा जा सकता है कि हमारे व्यवहार में सुधार के लिए उसकी उपस्थिति अनिवार्य है। सचमुच निंदक की उपयोगिता बहुत अधिक है। यदि उसकी वाणी को हम ध्यानपूर्वक ग्रहण करें तो हम अपने अंदर अनेक सुधार ला सकते हैं। वह हमारे अंदर सहनशीलता तथा सहनशक्ति के गुणों का संचार करवाता है। उसे हम अपना शुभचिंतक मान सकते हैं क्योंकि वह नहीं चाहता कि हम कोई भी गलती करें। आत्म-सुधार तथा आत्म शुद्धि के लिए निंदक आवश्यक है और अपनी उपयोगिता के लिए वह प्रशंसनीय भी है।

2015

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 3.

मन का आपा खोने का आशय बताइए।

Answer:

'मन का आपा खोने' का अभिप्राय है– अहंकार का त्याग करना।

निबंधात्मक प्रश्न

Question 4.

'ऐकै अषिर पीव का पढ़ै सु पंडित होय' पंक्ति का आप क्या अर्थ समझते हैं? प्रेम का एक अक्षर सभी ग्रन्थों से किस प्रकार भारी है, अपने जीवन के एक अनुभव के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'ऐकै अषिर पीव का पढ़ै सु पंडित होय' प्रस्तुत पंक्ति के द्वारा कबीर कहना चाहते हैं कि कोरे शास्त्रीय ज्ञान से कोई पंडित नहीं बन सकता। यदि मनुष्य 'ईश्वर' के नाम का स्मरण कर ले, ईश्वर भक्ति को अपना ले तो वह सच्चा ज्ञानी बन जाएगा। ईश्वर प्रेम से उसके ज्ञान रूपी चक्षु खुल जाते हैं और वह जीवन के सत्य से परिचित हो जाता है इस प्रकार वह बिना बड़े-बड़े ग्रंथ पढ़े ही विद्वान बन जाता है। परमात्मा से प्रेम का एक अक्षर सभी ग्रंथों पर भारी पड़ता है। एक बार मैंने एक गरीब भिखारिन को अपने नवजात शिशु के लिए दूध की गुहार लगाते देखा। पर लोगों ने देखकर भी उसे अनदेखा कर दिया और अपनी राह ली। संयोग से मैं भी उसी रास्ते से मंदिर में शिवलिंग पर दूध चढ़ाने जा रहा था। शिवरात्रि के उस पावन पर्व पर मैं भी भगवान पर अभिषेक कर कृतार्थ होना चाहता था, परंतु जैसे ही उस भिखारिन ने मुझसे अपने शिशु के लिए दूध माँगा मैं दुविधा में फँस गया। बुद्धि पर हृदय हावी रहा। मैंने वह दूध उस भिखारिन को देकर आत्मसंतुष्टि का अनुभव किया। मैंने उस दिन इस सत्य को समझ लिया था कि 'नर सेवा ही नारायण सेवा' है। अब मुझे किसी और ज्ञान की आवश्यकता नहीं थी।

2014
अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 5.

कबीर के अनुसार किस दीपक को देखकर मन का अँधेरा दूर हो जाता है?

Answer:

कबीर के अनुसार ईश्वर के ज्ञान रूपी दीपक को देखकर मन का अँधेरा दूर हो जाता है।

लघुत्तरात्मक प्रसन

Question 6.

कबीर की किसी साखी के आधार पर बताइए कि कबीर किन जीवनमूल्यों को मानव के लिए आवश्यक मानते हैं?

Answer:

कबीरदास जी ने अपनी साखी में मीठी वाणी का महत्व प्रतिपादित किया है। उनका मानना है कि हमें ऐसी वाणी बोलनी चाहिए जो हमारे हृदय के अहंकार को मिटा दे, जिसमें हमारी विनम्रता झलकती हो क्योंकि ऐसी वाणी द्वारा ही आपसी भाई-चारे की भावना का संचरण हो सकता है। मधुरवाणी बोलने वाला न केवल अपने शरीर को शीतलता प्रदान करता है, वरन् सुनने वाले को भी आत्मिक सुख-प्रदान करता है। कठोर वचन बोलने से, जहाँ हमारे मन में आक्रोश उत्पन्न होता है वहीं मधुर वचन हमारे हृदय को शांत एवं आनंदित कर देते हैं। उसमें विनय का संचार करता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2013
लघुत्तरात्मक प्रसन

Question 7.

कबीर के अनुसार कैसी वाणी का प्रयोग करना चाहिए और क्यों?

Answer:

कबीर के अनुसार हमें शीतल व मीठी वाणी का प्रयोग करना चाहिए, ताकि हमारा मन भी 'शांत' व प्रसन्न रहे और सुनने वालों को भी अच्छी लगे। 'मीठी' वाणी के प्रयोग से हमारा 'क्रोध' समाप्त हो जाता है और दूसरों का मन भी प्रसन्नता से भर जाता है।

2012
लघुत्तरात्मक प्रसन

Question 8.

कबीर की भक्ति-भावना का वर्णन अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

Answer:

कबीर ईश्वर के निर्गुण, निराकार, अलख, अरूप और सर्वव्यापी रूप की उपासना करते हैं। कबीर की दृष्टि में ईश्वर कण-कण में समाए रहते हैं, व्याप्त रहते हैं अतः ईश्वर को खोजने के लिए न तो किसी मंदिर-मस्ज़िद-गुरुद्वारे व गिरिजाघर में जाने की आवश्यकता है और न ही तिलक, माला और गेरुआ वस्त्र आदि आडंबरों को अपनाने की आवश्यकता है। ईश्वर हर जीव में, हर प्राणी में निवास करते हैं। ईश्वर तो हर जीव में आत्मा रूप में विराजते हैं।

Question 9.

'अहंकार का भाव भक्ति मार्ग की सबसे बड़ी बाधा है।' कबीर की साखी के आधार पर सिद्ध कीजिए।

Answer:

कबीर ने उचित ही कहा है कि अहंकारी मनुष्य को ईश्वर की भक्ति प्राप्त नहीं होती है। कवि ने स्पष्ट रूप से कह दिया है कि जिस मनुष्य के मन में अहंकार की भावना होती है उसे कभी ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती। जिसके मन में ईश्वर निवास करते हैं उसके मन में अहंकार की भावना नहीं होती। कबीर के अनुसार, जिस मनुष्य को ज्ञान नहीं होता उसी के मन में अहंकार होता है और जिसे सच्चा ज्ञान प्राप्त हो जाता है उसके मन से अज्ञानता दूर हो जाती है।

2011
अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 10.

"ईश्वर कण-कण में व्याप्त है" पर हम उसको क्यों नहीं देख पाते?

Answer:

ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, परंतु हम अपनी अज्ञानता के कारण उसको नहीं देख पाते।

2010
लघुत्तरात्मक प्रसन

Question 11.

कबीर ने किस व्यक्ति को सुखी और किसको दुखी माना है? 'कबीर की साखी' के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

Answer:

कबीरदास जी सांसारिक मोह-माया में लिप्त लोगों पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि वे खाते हैं और सोते हैं अर्थात् भौतिक सुखों में जीवन यापन कर स्वयं को सुखी अनुभव करते हैं। दूसरी तरफ़ कबीरदास जी जैसे विचारक हैं जो मोह-माया में फँसे लोगों को देखकर दुखी हैं क्योंकि वे इस सत्य से परिचित हैं कि संसार नश्वर है और मोह-माया में लिप्त रहकर ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती। ज्ञान के कारण कबीरदास जी उन लोगों के लिए दुखी हैं जो क्षणिक सुख के लिए शाश्वत सुख के प्रति उदासीन हैं। यहाँ सांसारिक मोह-माया में फँसे लोगों को सुखी और ज्ञानी जन को दुखी कहकर कवि ने यह स्पष्ट किया है कि वे ईश्वर-भक्ति से विमुख लोगों की दुर्दशा देखकर सो नहीं पाते।

2009
लघुत्तरात्मक प्रसन

Question 12.

कबीर के विचार से निंदक को निकट रखने के क्या-क्या लाभ हैं?

Answer:

कबीर के विचार से निंदक को निकट रखने से यह लाभ हो सकता है कि उसके द्वारा हमारी बुराई करने से अपने मन में आए विकारों को जाँचने-परखने का अवसर मिल जाता है। अगर कोई हमारे मन में विकार आ गया है, तो हम उसे तत्काल निकालने या सुधारने की कोशिश करते हैं जिससे हमारा मन निर्मल हो जाता है और फिर कोई इस प्रकार का विकार न आए इसका सदा ध्यान रखते हैं।

Question 13.

सुखी होने और दुखी होने के बारे में कबीर की क्या मान्यता है? वह अपने-आप को दुखी क्यों मानते हैं? 'जागते-सोने' का भाव स्पष्ट करते हुए बताइए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

सुखी होने और दुखी होने के बारे में कबीर की यह मान्यता है कि वे लोग सुखी नहीं हैं जो माया-मोह से दूर नहीं हैं अर्थात् सांसारिक सुखों में लिप्त रहते हैं। उनका ध्यान भगवान की तरफ़ बिल्कुल नहीं है। वे सदा भोग-विलास में लिप्त रहते हैं। कबीर ऐसे लोगों की स्थिति को देखकर स्वयं दुखी रहते हैं और सोते-जागते सदा भगवान से प्रार्थना करते रहते हैं कि भगवान उनको सद्बुद्धि दें और सांसारिक मायाजाल से उद्धार करें।

Question 14.

'पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोय' कबीर के इस काव्यांश की सार्थकता पर टिप्पणी कीजिए।

Answer:

"पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोय' कबीर के इस काव्यांश की सार्थकता इस प्रकार है कि अधिकतर लोग बड़े-बड़े ग्रंथ पढ़ते हैं और बड़ी-बड़ी उपाधियाँ व पुरस्कार प्राप्त करते हैं, मगर वास्तव में सच्चा पंडित (ज्ञानी) आज तक कोई नहीं बना। कबीर दास सच्च पंडित (ज्ञानी) उसी व्यक्ति को मानते हैं जो सबके साथ सद्भावनापूर्व व्यवाहार करे और सबके साथ प्रेमपूर्वक, मिलजुलकर रहे तथा सहन करने की शक्ति रखे। मगर आज तो वैमनस्यता तो चरमोत्कर्ष पर है।

Question 15.

कबीर का अपने को 'दुखिया' और संसार को 'सुखिया' कहने का क्या अभिप्राय है? स्पष्ट कीजिए।

Answer:

कबीर का अपने को 'दुखिया' कहने का यह तात्पर्य है कि लोग सच्चाई को नकार कर भोग-विलास में लिप्त हैं। यह सब देखकर कबीर दुखी होते हैं, मगर फिर भी संसार को 'सुखिया' कहते हैं कि संसार के लोग जीवन का आनंद लेने में व्यस्त हैं और ज़्यादा-से-ज़्यादा अपने सुख का सामान जुटाने में लगे हैं। मगर पेट भर खाने में लोगों को कोई संतोष नहीं होता है और बहुत खाने के चक्कर में लोग परेशान और दुखी हैं अर्थात् वे खुद अपने दुखों का सामान जुटानें में लगे हुए हैं जिसे वे सुख का सामान कहते हैं। कबीर के अनुसार भगवन भजन में सबको ध्यान लगाना चाहिए, मगर कोई भी अपना ध्यान भगवन भजन में नहीं लगाता है, जिसकी वजह से वह अपार दुख भोगता रहता है। यह सब देखकर ही कबीर दास जी दुखी होते हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in